AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 ISSN: 3048-7951

पर्यावरण पारिस्थितिकी और सतत विकास

शंकर लाल[1]

https://doi.org/10.5281/zenodo.18072761
Review: 19/12/2025 Acceptance: 21/12/2025 Publication: 28/12/2025

सारांश– विकसित भारत की अवधारणा केवल प्रयोगशालाओं या कक्षाओं में नहीं बनेगी वह उन युवा शोधकर्ताओं के मन और हृदय में जन्म लेगी जो अलग सोचने का साहस रखते हैं, आज हम पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहे हैं और एक टिकाऊ भविष्य की तलाश कर रहे हैं। मानव और पर्यावरण के बीच अन्तः क्रिया को समझना महत्वपूर्ण है, इस लेख के माध्यम से हम पर्यावरण परिस्थितिकी और सतत विकास की अवधारणा का विस्तार से अध्ययन करेंगे तथा हम अपने ग्रह को संरक्षित करने और हरित जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए व्यवहारिक कदमों की जाँच करेगें।

मुख्य शब्द– पर्यावरण परिस्थितिकी, सतत विकास, आर्थिक विकास, सामाजिक समानता, पर्यावरण संरक्षण।

प्रस्तावना– पर्यावरण पारिस्थितिकी और सतत विकास निकट से सम्बन्धित अवधाराणाएँ हैं जो प्राकृतिक प्रणालियों और मानव समाज के बीच अन्तः क्रिया पर ध्यान केन्द्रित करती हैं, पारिस्थितिकी जीवित चीजों और उनके पर्यावरण के अध्ययन को संदर्भित करती हैं जबकि सतत विकास में भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना वर्तमान जरूरतों को पूरा करने के लिए कदम उठाना शामिल है, ये दोनों अवधारणाएँ पर्यावरण के संरक्षण और टिकाऊ भविष्य को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करती हैं।

पर्यावरण परिस्थितिकी और सतत विकास के व्यापक विषय–

परिस्थितिकी और सतत विकास में प्रमुख विषय जिनमें प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, जैव विविधिता की सुरक्षा अपशिष्ट प्रबन्धन, नवीकरणीय ऊर्जा, सतत कृषि, वायु और जल की गुणवत्ता, जलवायु परिवर्तन शमन, आदि महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल हैं।

सतत विकास के तीन प्रमुख स्तंम्भ–

- **आर्थिक विकास**
- **सामाजिक समानता**
- **पर्यावरण संरक्षण**

सतत विकास तीन परस्पर सम्बन्धित स्तंभों पर आधारित है, आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरण संरक्षण टिकाऊ भविष्य सुनिश्चित करने के लिए इन तीनों स्तम्भों को मिलकर काम करना होगा आर्थिक विकास का उद्देश्य लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना है, सामाजिक समानता का उद्देश्य समान अवसर उपलब्ध कराना है तथा पर्यावरण संरक्षण का उद्देश्य प्राकृतिक संसाधनों और जीवन को बनाये रखने वाले पारिस्थितिकी तंत्रों को संरक्षित करना है।

पर्यावरण परिस्थितिकी और सतत विकास के लाभ– पर्यावरण, पारिस्थितिकी और सतत विकास हमारे जीवन के लिए बहुत तहत्वपूर्ण हैं। ये हमें स्वच्छ हवा, पानी और मृदा प्रदान करते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य और जीवन के लिए आवश्यक हैं

पर्यावरण के लाभ–

- **स्वच्छ हवा और पानी**– पर्यावरण हमें स्वच्छ हवा और पानी प्रदान करता है, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।
- **मृदा संरक्षण**– पर्यावरण मृदा को संरक्षित करता है, जो हमारे भोजन के लिए आवश्यक है।
- **जैव विविधता**– पर्यावरण जैव विविधता को बढ़ावा देता है, जो हमारे पारिस्थितिकी तंत्र के लिए आवश्यक है।

पारिस्थितिकी के लाभ–

- **पारिस्थितिकी संतुलन**– पारिस्थितिकी पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखती है, जो हमारे जीवन के लिए आवश्यक है।

[1]शंकर लाल, सहायक आचार्य, महाराजा सूरजमल टी.टी. कॉलेज, भरतपुर, राजेस्थान, भारत, Shankarlal871160@gmail.com

- **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण**– पारिस्थितिकी प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करती है, जो हमारे भविष्य के लिए आवश्यक हैं।
- **जलवायु परिवर्तन का नियंत्रण**– पारिस्थितिकी जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करती है, जो हमारे जीवन के लिए आवश्यक है।

सतत विकास के लाभ–

आर्थिक विकास– सतत विकास आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है, जो हमारे जीवन के लिए आवश्यक है।

सामाजिक समानता– सतत विकास सामाजिक समानता को बढावा देता है, जो हमारे समाज के लिए आवश्यक है।

पर्यावरण संरक्षण– सतत विकास पर्यावरण संरक्षण को बढावा देता है, जो हमारे भविष्य के लिए आवश्यक है।

ये लाभ दर्शाते हैं कि पारिस्थितिकी और सतत विकास न केवल पर्यावरण की रक्षा के लिए आवश्यक है बल्कि हमारे जीवन की गुणवत्ता और समाज कल्याण पर भी सकारात्मक प्रभाव डालते हैं।

चुनौतियों और आगे का रास्ता– सतत विकास लक्ष्य पर्यावरणीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए एक व्यापक ढाँचा प्रदान करते हैं लेकिन जागरुकता और शिक्षा की कमी, आर्थिक दबाव, परस्पर विरोधी हित, प्रभावी बिनियमन और नीतियों का अभाव, सीमित प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन, जेव विविधिवता का ह्यास, जल संकट और प्रदूषण जैसी कई चुनौतियाँ भी हैं। इन चुनोतियों के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो हमें पर्यावरणीय विचारों को विकास योजना में स्वीकृत करे, सतत प्रथाओं को बढ़ावा दे, क्षमता निर्माण प्रयासों को बढ़ाये और अंतराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा दें।

निष्कर्ष– प्रस्तुत लेख में हमने पारिस्थितिकी और सतत विकास के अर्थ, की विस्तार से व्याख्या की इसके प्रमुख लाभों और चुनौतियों पर भी प्रकाश डाला है लेकिन अब काम करने का समय है, हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में स्थिरता को बढ़ावा देने वाले ठोस कार्यों के माध्यम से बदलाव ला सकता है, पुनः उपयोग करने और पुनर्चक्रण से लेकर प्रकृति संरक्षण को बढ़ावा देने और जिम्मेदार उपयोग को अपनाने तक हर छोटा बदलाव मायने रखता है, एक साथ मिलकर हम एक ऐसा माहौल बना सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ–

- **ओपरा ओचा, एस. और दत्ता, एस** (2011), सतत विकास के लिए लिंग और ऊर्जा। पर्यावरणीय स्थिरता पर वर्तमान राय, 3 (4), 265–271.
- **अग्रवाल एस.के.** (1994) पर्यावरण मुद्दे विषय नई दिल्लीः ए.पी.एच. पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन।
- **सी.ई.ई.** (1994) पर्यावरण शिक्षा में आवश्यक शिक्षा, अहमदाबाद, सी.ई.ई. प्रकाशन।
- **गर्ग. बी. और तिवाना** (1995) पर्यावरण प्रदूषण और संरक्षण, डीप एंड डीप प्रकाशन, नई दिल्ली।
- एन.सी.ई.आर.टी.(1981) स्कूल स्तर की पर्यावरण शिक्षा, एक प्रमुख शोध पत्र नई दिल्ली, एन.सी.ई.आर.टी. प्रकाशन।